

खनति क्षेत्रों का पुनः हरतिकरण

प्रीलिमिंस के लिये:

भारत में खनन क्षेत्र

मेन्स के लिये:

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा खनन क्षेत्र संबंधी नरिणय लेने का कारण एवं इसका प्रभाव

चर्चा में क्यों?

हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को खनन लाइसेंस धारकों द्वारा खनन क्षेत्रों की बंजर भूमि का पुनः हरतिकरण (मुख्यतः घास-Regriassing) किये जाने संबंधी नए प्रावधान को लाने का आदेश दिया है।

मुख्य बदि:

- सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार को आदेश दिया है कि प्रत्येक खनन लाइसेंस, पर्यावरण मंजूरी और खनन योजना के लिये विभिन्न खनन क्षेत्रों में पुनः हरतिकरण (मुख्यतः घास) को एक अनविर्य शर्त के रूप में शामिल किया जाए।
- सर्वोच्च न्यायालय ने यह नरिणय ओडिशिा की कुछ नज्जि खनन संस्थाओं एवं ओडिशिा खनन नगिम द्वारा दायर की गई लौह अयस्क खनन संबंधी अपील की सुनवाई करते हुए दिया।

क्या है सर्वोच्च न्यायालय का आदेश?

- सर्वोच्च न्यायालय ने कहा किजिस क्षेत्र में खनन किया गया है, उस क्षेत्र में फरि से पर्यावरणीय बहाली की जानी चाहिये इससे इन खनन क्षेत्रों में पशुओं के लिये घास सहति अन्य वनस्पतयिों वकिसति हो सकेंगी।
- सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार, अगर भारत संघ खनन क्षेत्र को लाइसेंस एवं पर्यावरणीय मंजूरी प्रदान करने के लिये 'बंद किये गए खनन क्षेत्रों' तथा खनन क्ररिया-कलापों के कारण पर्यावरणीय रूप से क्षतगिरस्त क्षेत्रों का पुनः हरतिकरण (मुख्यतः घास) करने की आवश्यक शर्त रख दे तो यह वनस्पता, प्राणीजात और चारे के बकिस के लिये उपयुक्त होगा।
- सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार से तीन सप्ताह में कार्यवाही से संबंधति रपिोर्ट प्रस्तुत करने तथा खनन लाइसेंस-धारकों द्वारा इन मानकों का अनुपालन किये जाने हेतु आवश्यक प्रक्ररिया सुनश्चिति करने को कहा है।
- खनन किये गए क्षेत्र में पुनः हरतिकरण (मुख्यतः घास) तथा खनन क्ररिया-कलापों के कारण हुई पर्यावरणीय क्षत की पर्यावरणीय बहाली की लागत खनन लाइसेंसधारक द्वारा वहन की जाएगी।

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा क्यों दिया गया है यह आदेश?

- सर्वोच्च न्यायालय ने यह आदेश इसलिये दिया है क्योंकि खनन प्रक्ररियाओं में प्रयुक्त रसायनों द्वारा भूमि का क्षरण, सकिहोल्स (Sinkholes) का नरिमाण, जैव-वविधिता का नुकसान और मटिटी, भूजल एवं सतही जल प्रदूषति होता है।
- एक ऐसा क्षेत्र जो खनन कार्य किये जाने के कारण पूरी तरह से घास-मुक्त हो गया हो, वहाँ शाकाहारयिों के लिये भोजन संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

खनन के कारण होने वाली पर्यावरणीय क्षत:

- खदानों में बारूद के उपयोग, खानों से ढुलाई एवं परविहन और कचरे के ढेरों के कारण वायु प्रदूषण होता है।

- लौह अयस्क/खनिज खानों से निकलने वाले अपशिष्ट में उपस्थिति आणविक अथवा अन्य हानिकारक तत्वों से जल प्रदूषित होता है।
- खनन के कारण उपलब्ध जल क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन, जैसे कसिती बहाव, भूमिगत जल की उपलब्धता में परिवर्तन और जल स्तर का और नीचे चला जाना।
- भूमिकटाव, धूल और नमक से भूमि के स्वरूप में परिवर्तन होता है।
- वनों के वनिश के कारण पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं को नुकसान होता है।
- अनुपचारित कचरे के ढेर के कारण क्षेत्र की सुंदरता नष्ट होती है।

स्रोत- द हट्टि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/regrassing-after-mining>

